पंचम अध्याय

"'पाँच आँगनों वाला घर' में चित्रित समस्याएँ"

पंचम अध्याय

"'पाँच आँगनों वाला घर' में चित्रित समस्याएँ"

- ❑ प्रास्ताविक
- 5.1 समस्या क्या होती है?
- 5.2 समस्या इस शब्द का अर्थ
- 5.3 उपन्यास की समस्या
- 5.4 उपन्यास के कथानक की समस्या
- 5.5 पारिवारिक समस्या
  - 5.5.1 'पाँच आँगनों वाला घर' की पारिवारिक समस्या के कारण
  - 5.5.1.1 घर के प्रमुख व्यक्ति के कारण
  - 5.5.1.2 देश को मिली स्वतंत्रता का परिणाम
  - 5.5.1.3 बदलती परिस्थितियों के परिणाम
  - 5.5.1.4 पाश्चात्यों के अंधानुकरण के कारण
  - 5.5.1.5 संकुचित विचार स्वार्थ भावना
- 5.6 राजनीतिक समस्या
- 5.7 आर्थिक समस्या
- 5.8 मनोवैज्ञानिक समस्या

5.9 सामाजिक समस्या

5.9.1 बूढ़ेपन की समस्या

5.9.2 नारी समस्या

5.9.3 भ्रष्टाचार

5.9.4 जातीयता

5.9.5 व्यसनाधीनता

5.9.6 यौन समस्या

5.10 धार्मिक समस्या

निष्कर्ष

पंचम अध्याय

"'पाँच आँगनों वाला घर' में चित्रित समस्याएँ"

❑ प्रास्ताविक -

मनुष्य को जीवन के बारे में जैसे-जैसे समझ आने लगती है वैसे-वैसे समस्याएँ उसके सामने उभर आने लगती हैं। जीवन जीते समय जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य को कई समस्याओं का सामना तो करना ही पड़ता है। मनुष्य के जीवन की पाँच अवस्थाएँ होती हैं। बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढावस्था, वृद्धावस्था इन पाँच अवस्थाओं से गुजरते हुए मनुष्य का जीवनक्रम चलता है। हर अवस्था में हर प्रकार की समस्याओं से उसे जूझना पड़ता है। बाल्यावस्था की समस्याओं का निराकरण तो माता-पिता द्वारा हो जाता है लेकिन जैसे मनुष्य जीवन को जानने लगता है वैसे शुरू हो जाता है जीवन-संघर्ष और उसीसे निर्माण होने लगती है समस्याएँ।

समाज में रहनेवाले इस प्रगत मनुष्य के सामने तो समस्याओं का पहाड़ ही दिखायी देता है। विज्ञान के विकास ने मनुष्य को विकास की ऊँचाई तक पहुँचा दिया किंतु समस्याओं को और भी अधिक कड़ा कर दिया। अप्रगत अवस्था में रहनेवाले मनुष्य को उतनी ज्यादा समस्या नहीं आती होगी जितनी की आज के प्रगत समाज में दिखायी देती है। प्राचीन मनुष्य की समस्याओं का विस्तार सीमित था किंतु प्रगत समाज में रहनेवाले मनुष्य की आवश्यकताएँ और महत्त्वाकांक्षा जितनी तेज गति से बढ़ी उतनी समस्याओं को उसने आमंत्रण दे दिया। भौतिक सुख, साधना, विविध सुख के साधन, विकसित तंत्रज्ञान के कारण शरीर को मिलनेवाला आराम इन सभी बातों का परिणाम मनुष्य के जीवन पर, उसके स्वास्थ्य पर और आयुर्मान पर होता दिखायी दिया है। भौतिक सुखों के पीछे दौड़ते दौड़ते एक तनाव भरी जिंदगी को मनुष्य ने अपना लिया है। इसी कारण शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य को भी पूरी तरह से बिगाड़ दिया है। मनुष्य का जीवन स्वस्थ न होकर बेचैनी और झुंझलाहट में बीतने लगा है।

समस्या चाहे कैसी भी हो, विविध पद पर रहनेवाले लोग हो, उच्च पदाधिकारी हो, अमीर हो, गरीब हो, साधू-संत, राजगुरू या राजा, सभी को अलग समस्याओं का सामना करना ही पड़ता है। मिश्र जी लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में कई प्रकार की समस्याएँ दिखायी देती हैं।

5.1 समस्या क्या होती है? -

उपन्यासकार का प्रमुख उद्देश्य होता है कि मनुष्य जीवन को उद्घाटित करना। मनुष्य जीवन की वास्तविकता को अत्यंत प्रामाणिकता से सामने रखना यही उपन्यासकार का कार्य होता है। मानव जीवन का सूक्ष्म चित्रण करते हुए जीवन के यथार्थ स्वरूप को परिभाषित कर जीवन की समस्याओं को उपन्यासकार उजागर करता है। मनुष्य का जीवन विविध समस्याओं से घिरा हुआ है। जीवन जीते समय उसे कई ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिसके प्रति वह बिल्कुल अनजान होता है। मनुष्य के जीवन के अंत तक समस्याएँ उसका पीछा नहीं छोड़ती। समस्याएँ केवल एक व्यक्ति को ही नहीं बल्कि समाज देश और पूरे विश्व में व्याप्त होती है। मनुष्य को दो तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समाज में रहते हुए समाज में व्याप्त अनगिनत बाह्य समस्याओं से जूझना पड़ता है और दूसरे उसके मन में रहनेवाले विचारों के साथ-साथ उत्पन्न होती है। समाज की बाह्य समस्याओं का परिणाम उसके व्यक्तिगत जीवन पर होने के कारण उसकी भीतरी समस्याओं का निर्माण होने लगता है। साहित्यकार इन सभी तरह की समस्याओं की अनुभूति लेता है। उसके संवेदनशील मन में समस्याएँ हावी होती है और उन्हीं समस्याओं का गहनता से अध्ययन कर वह उन्हें अपने साहित्य में उतार देता है।

गोविंद मिश्र जी ने मनुष्य जीवन की त्रासदी को उनके एक सहपाठी मित्र के परिवार की दारूण अवस्था को 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में चित्रित किया है। जीवन की त्रासदी और पाँच पीढ़ियों की जीवन गाथाओं की अलग-अलग समस्याओं को चित्रित किया है। एक ही परिवार की पारिवारिक गाथा और धीरे-धीरे एक ही व्यक्ति तक सिमटता भरा पूरा एकल परिवार और उस परिवार की समस्याओं को चित्रित किया है।

5.2 समस्या इस शब्द का अर्थ -

1) समस्या - "वह उलझन वाली विचारसरणी या बात है जिसका निराकरण सहज सहज में न हो सके। कठिन या विकट प्रसङ्ग"[1] (प्रॉब्लेम)

2) मानक हिन्दी कोश में समस्या संबंधी बतायी हुई बात इस प्रकार है : समस्या - "मिलने की क्रिया या भाव; मिलन, मिश्रण, संघटन। उलझन वाली ऐसी विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में नहीं हो सकता है कठिन या बिकट प्रसंग।"[2]

'पाँच आँगनों वाला घर' यह पूरा उपन्यास पारिवारिक विघटन की त्रासदी को बताता है। डॉ. प्रेमशंकर जी ने इस उपन्यास को मोहभंग का दारूण दस्तावेज ऐसा कहकर इसकी त्रासदी को और भी अधिक तीव्र किया है। त्रासदी या संघर्ष से ही समस्याओं का निर्माण होता है। इस उपन्यास में सामन्ती परिवार के विघटन का चित्रण किया हुआ है। सामन्ती परिवार की समस्या संबंधी विजयकुमार अग्रवाल का कथन सही लगता है - ''इस वर्ग में अधिकार और संपत्ति का भोग है, कर्तव्यों की उपेक्षा है। घोर व्यक्तिवादी प्रवृत्तियाँ उसे घृणित स्वार्थ में जकड़ अहम्‌वादी बना देती है, जिससे वह स्वयं को शेष समाज से अलग विशिष्ट मान बैठता है। सत्ता और संपत्ति का एक ही बिन्दु पर सकेन्द्रण उसे क्रमश: नृशंस एवं भोगवादी बनाने का कारण बनता है। इन्हीं प्रवृत्तियों द्‌वारा संचलित सामंतवादी मस्तिष्क अनेक सामाजिक समस्याओं के जन्म का कारण बनता है।''[3]

मनुष्य जीवन में जितनी महत्त्वाकांक्षाओं और अपेक्षाओं को अपना लेता है उतनी समस्याओं के साथ उसे जूझना पड़ता है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर जब निर्भर होता है, या समाज पर निर्भर होता है तो अपनी इच्छानुसार उससे संबंधित व्यक्ति या समाज के प्रति आग्रहित होता है और जब उसकी इच्छा की तृप्ति नहीं हो पाती है तो वह टूटता है, या संघर्ष करता है और इसी प्रकार अनेक उलझन और कठीन प्रसंग या समस्याएँ उसके सामने आती है।

5.3 उपन्यास की समस्या -

समस्या का अर्थ और समस्या की व्याप्ति समझ लेने के बाद इस उपन्यास की समस्या के बारे में थोड़ा सोच विचार करेंगे। आधुनिक हिन्दी साहित्य में इस तरह के उपन्यास का निर्माण सर्वप्रथम ही हुआ है ऐसा दिखायी देता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास की ओर देखने पर हम इस नतीजे पर पहुँच सकते हैं कि करीब-करीब पाँच पीढ़ियों का चित्रण (स्पष्ट रूप में तीन) पहली बार एक ही कथानक में गुँफा गया है और अत्यंत बृहत् न बनाते हुए कम से कम कलेवर में बुनाया गया है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का निर्माण परंपरागत उपन्यास लेखन के अनुसार बिल्कुल भी नहीं बन पड़ा है। एक के बाद एक करके कथा का रहस्यमय उद्‌घाटन इसमें नहीं है बल्कि यह जिस तरह आम आदमी का रोजमर्रा का जीवनक्रम होता है उसी तरह बनता गया है। इस उपन्यास में वह सारी वास्तविक बातें हैं या सच्चाई है जो भारतीय समाज में 1940 से लेकर 1990 तक

प्रत्यक्ष रूप में घटित हुई थी। उपन्यासकार कल्पना विश्व से ही उपन्यास या साहित्य का निर्माण करता है किंतु मिश्र जी ने कल्पना का आधार लेना शायद महत्वपूर्ण नहीं समझा है। किसी इतिहासकार के भाँति वे पारिवारिक ऐतिहासिकता तो मात्र लिखते गये हैं।

उपन्यास की समस्या मेरे विचार से यही है कि आज तक के उपन्यासकारों की तरह उपन्यास को कल्पना के रंग में रंगकर, या उसकी रंगरंगोटी करते हुए उसे प्रस्तुत करने का कार्य मिश्र जी ने नहीं किया है बल्कि भारतीय समाज की पारिवारिक त्रासदी को ही वह लिखते गए हैं जो उपन्यास की समस्या ही है और यही समस्या कई तरह की समस्याओं को खड़ा कर देती है। साथ ही उपन्यास की समस्या यह भी है कि इसमें कहीं पर भी नाटकीयता या बनावट नहीं है। या एक के बाद एक प्रकरण जो जैसे हुआ था वैसे ही ऐतिहासिक चित्रण इस उपन्यास की समस्या बन पड़ा है।

5.4 उपन्यास के कथानक की समस्या -

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास के कथानक में एक तरह से समस्या ही दिखायी देती है। कथानक में जो वास्तविकता बतायी गयी है उसकी प्रामाणिकता भारतीय समाज में स्थित परिवार की घोर वास्तविकता होने के कारण इसका कथा विस्तार घटनाओं के उपर नहीं जा पाता है और न ही इसमें रोचकता दिखायी देती है। वह सिर्फ वास्तविकता की परिधि में ही रहता है। प्रामाणिकता के कारण कलात्मकता का अभाव दिखायी देता है। साथ ही में नौ रसों में से कोई भी एक प्रमुख रस या विविध रसों से युक्त उपन्यास नहीं दिखायी देता है। अत्यंत यथार्थता के कारण इसमें कलात्मकता और शृंगार का अभाव दिखायी देता है। पारिवारिक त्रासदी के कारण करूण रस का पुट इसमें जरूर नजर आता है किंतु फिर भी इस उपन्यास को हम यह नाम दे सकते हैं कि, भारतीय परिवार का प्रतिबिंब ही इसमें नजर आया है। डॉ. उर्मिला शिरीष के उनकी यथार्थता संबंधी जो विचार है - "मिश्र जी का यथार्थ और सामाजिकता के प्रति आग्रह पूर्वग्रह की हद का है।"[4] इसी कारण कथानक में यथार्थता का अधिक्य होने से कथानक मनुष्य के हर रोज की जीवनगाथा को प्रस्तुत करता है।

कथानक दादी माँ से लेकर जोगेश्वरी, राधेलाल, राजन, राजन के बेटों तक आती है। कथानक एक के बाद एक श्रृंखलाबद्ध न बताकर पात्रों के सामने फ्लैश

बैक के रूप में उभर आती है। सामान्य तौर पर इस तरह के कथानक झट से समझ में नहीं आते हैं। पाठक को इस कथानक को समझने में थोड़ी सी कठिनाई होती है। राजन के सामने अपना अतीत आता है और फिर उसीसे कथानक आगे बढ़ता हुआ नजर आता है जो सहजता से पाठक के ध्यान में आने में कठिनाइयाँ होती है। इस प्रकार से कुछ छुट-पुट बातें समस्याओं का निर्माण करती है।

5.5 पारिवारिक समस्या -

गोविन्द मिश्र लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास का शीर्षक ही पारिवारिकता को बताता है। संयुक्त एकल परिवार का बिखराव, धीरे-धीरे पारिवारिक सदस्यों का अलग होना और अंत में एक ही व्यक्ति तक परिवार का सिमटना पारिवारिक समस्याओं को निर्माण करता है। उपन्यास का विषय परिवार पर आधारित है, भारतीय समाज में रहनेवाले मध्यवर्गीय सामन्ती परिवार की दारूण स्थिति का चित्रण मिश्र जी ने किया है।

"पचास वर्षों (1940 से 1990) के भारत की पृष्ठभूमि में रचा गया यह उपन्यास एक परिवार की तीन पीढ़ियों के कथा के माध्यम से हमारे समाज के केन्द्र बिंदु 'परिवार' की विच्युति का आख्यान मात्र न होकर उन मानवीय संवेदनाओं के क्रमश: ऱ्हास की त्रासद कथा है जिसे कोई भी संस्कृति, किसी देश की मज्जा में रूपांतरित करती है।"[5] त्रासदी के कारण ही मनुष्य के जीवन में समस्याएँ घेर लेती है। संघर्ष समस्याओं को आमंत्रित करता है।

पारिवारिक समस्याओं का निर्माण तब होता है जब परिवार के सदस्य आत्मकेंद्रित बनने लगते हैं। परिवार के प्रति उनके मन में छोटी-सी छोटी बातों को लेकर आंदोलन होने लगता है और 'पाँच आंगनों वाले घर' की सामूहिक व्यवस्था, आत्मीय संबंध इस पीढ़ी के लिए अकल्पनीय हैं। इस पीढ़ी का सामान्य ज्ञान जितना भी हो पर कल्पना शक्ति शून्य है। घर परिवार, पास पड़ोस, सगे-संबंधियों की कौन कहे यह पीढ़ी अपने माता-पिता को भी केवल स्वीकार करती है कि "पापा खर्च चलाते है और मम्मी घर चलाती है। मध्यवर्गीय समाज में अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से जिस आपसंस्कृति का प्रसार हुआ उसमें संपत्ति के प्रति मोह, विदेश जाने की तड़प, सिगार पीना, बियर पीना,

रेस्तराँबाजी करना, रॉक सुनना, आधुनिकता, परिपक्वता और स्वावलम्बी ... माने पूरा आदमी हो की निशानियाँ मानी जाती है। शील, संकोच, मर्यादा, कृतज्ञता, त्याग, सेवा जैसे गुण इस पीढ़ी के लिए अपरिचित और कालबाह्य है। अपनी इच्छा के विपरीत होने पर माता-पिता के साथ भी शत्रुवत् व्यवहार करना वे अपना सहज अधिकार मानते हैं। उनकी दृष्टि में पुराने सारे मूल्य आदर्श और आचरण संबंधी सिद्धांत अतीत की वस्तुएँ हैं। उनके अपने समय उनका कोई मूल्य नहीं है।"[6] डॉ. तिवारी जी ने पारिवारिक कश्मकश को सच्चाई से पेश किया है। 'पाँच आँगनों वाला घर' के कथानक को और उसकी पारिवारिकता पर डॉ. तिवारी जी ने शत प्रतिशत भारतीय समाज के साथ जोड़ दिया है और मिश्र जी के लेखन प्राबल्य और उनकी वैचारिक क्षमता के प्रति आदर व्यक्त किया है। उन्होंने गोविन्द मिश्र को उपन्यास विधा की नई परम्परा का उद्भावक ऐसा कहा है। डॉ. तिवारी जी की इस तरह की समीक्षा से मैं बिल्कुल सहमत हूँ। 'छटपटाती नैतिकता की कथा' ऐसा कहते हुए 'पाँच आँगनों वाला घर' को आदर्शों और मूल्यों को अस्वीकार करनेवाली, पाश्चात्यों के प्रभावों तले दबी नई पीढ़ी की संकीर्ण अवस्था की स्थिति नैतिकता को किस तरह अपने पैरों तले कुचलती है इसका सही मूल्यांकन हुआ है । जो भारतीय परिवार की वास्तविकता को बताता है।

5.5.1 'पाँच आँगनों वाला घर' की पारिवारिक समस्या के कारण -

1) घर के प्रमुख व्यक्ति के कारण (राधेलाल का देशप्रेम)
2) देश को मिली स्वतंत्रता का परिणाम
3) बदलती परिस्थितियों के परिणाम
4) पाश्चात्यों के अंधानुकरण के कारण
5) संकुचित विचार स्वार्थ भावना

5.5.1-1 घर के प्रमुख व्यक्ति के कारण :-

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास के विघटन का सबसे पहला कारण तो यह है कि राधेलाल का देश प्रेम और देश की सेवा करने की राधेलाल की इच्छा एक तरह से अपनी इच्छा के अनुसार जीवन जीने की कामना यह भी एक तरह का स्वार्थ ही है। जिसके कारण परिवार के जिम्मेदार व्यक्ति होने पर भी परिवार से उनका ध्यान हट जाता

है। पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुकरना पारिवारिक विघटन का कारण बन जाता है। परिवार की आर्थिक अवस्था भी बिकट होने लगती है। राधेलाल का देश के लिए योगदान परिवार की एकसंघता को ग्रहण लगाता है और भरे पूरे एकल परिवार की नींव हिलने लगती है। जब तक राधेलाल अपने परिवार के प्रति सजग रहते हैं तब तक पूरा परिवार खुशहाल नजर आता है। किंतु राधेलाल के जाने से परिवार को बिकट स्थितियों का सामना करना पड़ता है। जोगेश्वरी राधेलाल की कमाई पर ही कुशल व्यवस्थापक बनती है। राधेलाल की कमाई बंद होने से जोगेश्वरी को एक-एक चीज बेचनी पड़ती है। परिवार के सभी सदस्य जो राधेलाल की कमाई पर ही गुजारा करते थे वे भी इतने बड़े परिवार का दायित्व निभाने में असमर्थ हैं। इसी कारण पारिवारिक समस्याओं का निर्माण होने लगता है। "ढहता हुआ घर हो गया था मुंशीजी का खोल। इधर से छपका मारकर सँभालो उठाओ की उधर से पलस्तर गिरने लगे, उपर से जगह जगह चुए और पानी बाहर नजा भीतर सडता रहे, जमीन को गलाता रहे।"[7]

5.5.1.2 **देश को मिली स्वतंत्रता का परिणाम :**

जैसे ही देश को आजादी मिली, हर एक इस आजादी के अर्थ अपनी-अपनी सोच के अनुसार लेने लगा। देश की स्वतंत्रता का असर ऐसा हुआ कि हर कोई स्वतंत्रता के पक्ष में स्वयं पर होने वाले अन्याय के विरोध में खड़ा हुआ। सजग और सतर्कता से जीने के लिए स्वयं को सुरक्षित रखने का प्रयास करने लगा किंतु उसकी यह स्वतंत्रता देश की स्वतंत्रता के विपरीत थी। आत्मकेंद्रित स्वयं स्वतंत्रता मिलने की चाह ने मनुष्य को अंधा बना दिया। उसे न तो अपनी जिम्मेदारियों का एहसास रहा, न रिश्ते नातों का और न ही समाज का वह तो सिर्फ अपने तक ही सिमटता गया। अपने स्वार्थ के लिए लड़ता रहा। घर से स्वतंत्र होने की चाह ने संयुक्त परिवार की परंपरा को खोखला कर दिया।

"सम्मिलित परिवार में व्यक्ति का विकास रूक जाता है। आपको भी अपने विकास के लिए बाहर निकलना पड़ा। अपनी अलग संपत्ति की चाह हर व्यक्ति में स्वाभाविक है, यह चाह ही प्रगति के लिए प्रेरणा बनती है। स्वतंत्रता चाहिए इस प्रकार देश की स्वतंत्रता के साथ पारिवारिक स्वतंत्रता के लिए सोचनेवाली जैसे पीढ़ी तैयार होना शुरू हुआ और पारंपरिक एकल परिवार के महत्त्व को स्वतंत्रता का नाम देकर ठुकरा दिया जाने लगा।"[8]

5.5.1.3 बदलती परिस्थितियों के परिणाम :

समाज में आए हुए बदलाव का असर परिवारों पर होने लगा। स्वतंत्रता के बाद लोकतंत्र का परिणाम व्यक्ति के वैचारिक क्षमता को बदलने लगा था। एक ही जगह, एक ही गाँव, शहर या राज्य में नौकरी न मिलने की वजह से या शिक्षा के लिए एकल परिवार में रहनेवाले व्यक्ति को घर से बाहर निकलना पड़ा। स्वयं गोविन्द मिश्र इस बात को मानते हैं कि बदलती परिस्थितियों के साथ बदलने की आवश्यकता मनुष्य के विकास के लिए जरूरी है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास के पात्र गोवद्र्धन द्वारा मिश्र जी अपने विचार पात्रों द्वारा जैसे कह देते है - "स्वतंत्रता के बाद लोगों के मिजाज बदल गए हैं। देखो तो ये लोग अपने पिता गांधी को मार देते हैं। आदर्श की बातें अब कोई नहीं करता। बड़े परिवारवाली नस्ल, पुरानी पीढ़ी और ही थी। नई पीढ़ी का वह करेजा नहीं है। स्वार्थ बढ़ रहा है ... जो है उसके लिए छीना-झपटी बढ़ेगी, आग तुम्हारे घर में घुसे उसके पहले ही तुम बच्चों को रवाना कर दो।"[9] गोवर्द्धन द्वारा शांति कही यह बात परिवर्तन चाहनेवाली कभी-कभी मनुष्य को परिस्थितियों के साथ बदलता पड़ता है।

5.5.1.4 पाश्चात्यों के अंधानुकरण के कारण :

अंग्रेज भारत छोड़कर चले गए किंतु अपने प्रभाव का सदा के लिए भारत छोड़ गए। स्वतंत्रता के बाद की पीढ़ी पर पाश्चात्यों का जितना भी प्रभाव पड़ा वह पारिवारिक विघटन का और पारिवारिक समस्या का सबसे बड़ा कारण है। विदेशी संस्कृति में भारतीय संस्कृति की तरह एकल परिवार का महत्त्व उतना नहीं जितना की भारत में था। विदेशी आकर्षण के कारण जीने के तौर-तरीके ही बदलने लगे थें। राजन का परिवार इस विदेशी व्यवस्था का, विदेशी संस्कारों का शिकार बन जाता है। बंटू और बिट्टो में अंग्रेजीयत इतनी अधिक घुल जाती है कि वह शादी भी एक विदेशी लड़की के साथ करना चाहता है। इतना ही नहीं बल्कि शादी से पहले उसे समझने के लिए उसके साथ रहने की कामना करता है। इस प्रकार विदेशी आकर्षण के कारण नैतिकता को पैरों तले कुचल डालता है।

5.5.1.5 संकुचित विचार स्वार्थ भावना :

परिवार के लोगों के प्रति सद्भावना से पेश आने का कष्ट आधुनिक समाज

में तो बिल्कुल नजर नहीं आता है। महत्त्वाकांक्षा का नाम देकर नई पीढ़ी, पुरानी पीढ़ी के विचार अपनाना नहीं चाहती है। मनुष्य जीवन की वास्तविकता यह है कि हर किसी को जीवन के सभी दौर से गुजरना पड़ता है। जो आज बच्चा है वह समय के बदलते बूढ़ा हो जाएगा यह जीवन की सच्चाई है किंतु मनुष्य इस वास्तविकता की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं देता है। उसके विचार इतने ऊँचे नहीं होते हैं जो जीवन की परिक्रमा को जानता हो। जीवन के प्रति मिश्र जी की जो धारणा है वह उन्होंने इस उपन्यास में इस प्रकार व्यक्त की है - ''कैसी विडम्बना कि जब तक समझ में आता है कि जीवन जो तुम्हें मिला उसका क्या करना चाहिए तब तक जीवन ही समाप्ति पर आया दिखता है।''[10] नई पीढ़ी जीवन की इस सच्चाई से अनभिज्ञ रहती है और संकुचित विचार तथा स्वार्थी भावना से पुरानी पीढ़ी की एहमियत जानने से इन्कार करती है। जीवन की सच्चाई जिसे समझ आती है वही परोपकार इन्सानियत और रिश्ते-नातों के लिए अपना योगदान देता है लेकिन जो मेंढक की तरह रहता है उसका विश्व तालाब से उपर नहीं हो सकता। विचारों की ऊँचाई तक वह नहीं पहुँच सकता। भारतीय परंपरा में संयुक्त परिवार का होना मनुष्यता के कल्याण का एक सही मार्ग था किंतु विदेशी सभ्यता के प्रभाव में आकर भारतियोंने अपनी मान, मर्यादा और परंपरा को तहस-नहस कर दिया है।

5.6 राजनीतिक समस्या -

मिश्र जी ने 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास को लिखते समय भारतीय समाज में स्थित संयुक्त परिवार को चित्रित किया है। 1940 से लेकर 1990 तक के कालखण्ड में भारतीय समाज की राजनीति में जो कुछ भी घटित हुआ था उसका प्रामाणिक दर्शन हमें इस उपन्यास में होता है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास के प्रमुख पात्र राधेलाल और सन्नी का राजनीति में संबंध बताया है और भारत के राजनीति की उन तमाम बातों को जिसका अत्यंत सूक्ष्म अध्ययन मिश्र जी ने किया हुआ है, उसका चित्रण भारतीय राजनीति की यथार्थता को बताता है। पंडीत नेहरू, लालबहादूर शास्त्री से लेकर व्ही.पी. सिंग, राजीव गांधी जी के राजकीय कार्यकाल का पूरा ब्यौरा मिश्र जी देते हैं। राजनीति की ढेर सारी बातों को जो पहले प्रधानमंत्री से लेकर राजीव गांधी तक की सारी राजनीतिक बारिकियों को जाननेवाले गोविन्द मिश्र सिर्फ साहित्यकार ही नहीं है बल्कि राजनीतिज्ञ भी है ऐसा लगता है।

सभी के विचारों के माध्यम से छात्र आंदोलन आरक्षण संबंधी उनके विचार इसमें दिखायी देते हैं। कथा से संबंधित राजनीति के सारे दाँव-पेच जो मिश्र जी भली-भाँति जानते हैं उसे देखकर आश्चर्य होने लगता है - इस उपन्यास में सभी के द्‌वारा जो बातें चित्रित की है वह इस प्रकार हैं - ''राष्ट्रपति के चुनाव में अपनी पार्टी के ही उम्मीदवार को हराने के लिए अन्तरात्मा की आवाज पर वोट डालने की बात की जाती है। अन्तरात्मा गांधीजी के समय कितना पवित्र शब्द था जैसे ये राजनेता देश की अन्तरात्मा को घोटने चल पड़े हैं। सत्ता अगर उस तरह नहीं आती जैसे जवाहरलालजी या शास्त्रीजी को मिली ... तो उसे पाने के लिए दाँव पेच करो। यह गन्दगी की शुरूआत है।''[11]

कुल मिलाकर राष्ट्रीय स्तर पर प्रजा, प्रजातन्त्र, संविधान और नैतिकता का मजाक उड़ाया जा रहा था उन्हीं लोगों द्‌वारा जो उनकी सुरक्षा के लिए नियुक्त किए गए थे।

''राष्ट्रीय स्तर पर दिखावेपन, अनैतिक आचरण का जो सिलसिला 1969 में शुरू हुआ था उसका चरमबिन्दु था यह। तब सत्ता को किसी भी तरीके से हथियाने की बात उठी थी, अब सत्ता में किसी तरह रहने की जिद है। उसके लिए कैसे-कैसे तरीके अविष्कृत हो रहे हैं। गांधीजी कहते थे साधन भी महत्वपूर्ण हैं, सिर्फ साध्य नहीं। यहाँ जो साध्य है वह छोटा स्वार्थ है ही ... उसके लिए कुछ भी साधन गिरफ्तारियाँ, यहाँ तक कि लोगों की स्वतन्त्रता छीन लेना भी जायज माने जा रहे हैं। यही स्वतन्त्रता जिसे पाने के लिए इतने वर्षों से संघर्ष चला था, इतने लोगों ने कुर्बानियाँ दी थीं। कहाँ गाँधीवाला समय जब अन्तरात्मा, नैतिकता की बातें थीं, कहाँ यह समय जब पाखंड और बेपर्दा होकर सामने आ रहा है।''[12]

इस प्रकार मिश्र जी ने देश की 1940 से लेकर 1990 तक की राजनीतिक स्थिति को उपन्यास के पात्र के द्‌वारा बतायी है। सन्नी इस उपन्यास के शुरू में बिल्कुल निकम्मे दिखायी देते हैं किंतु समय के चलते उनमें जो परिवर्तन आता है उससे वे एकदम बदल जाते हैं। जीवन की वास्तविकता को समझते हैं। अध्यात्म को जानने के बाद कुछ समय तक साधु भी बन जाते हैं और यह सब कुछ करने का उनका उद्‌देश्य होता है कि भारतीय समाज की राजनीति में साफ-सुथरापन हो, आदर्श और नैतिकता हो। स्वतंत्रता के पश्चात् सत्ता की लालसा रखकर आनेवाले राजनीतिक नेताओं के विरोध में वे लिखते

रहते हैं। उनके अच्छे विचार सत्ताधारियों को काँटे की तरह चुभने लगते हैं। उनकी सच्चाई से भरी बातें सरकार के खिलाफ हो जाती है। जिस संघटना में सन्नी कार्यरत होते हैं उसको 'असामाजिक तत्व' और 'देशद्रोही' ऐसा करार दिया जाता है और पुलिस उनके पीछे लगती है। सन्नी पुलिस से बचते बचाते कई भेंस बदल देते हैं। सन्नी के माध्यम से मिश्र जी ने भारतीय राजव्यवस्था पर प्रकाश डाला है और उसके इतिहास को दोहराया है।

5.7 **आर्थिक समस्या -**

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास के कथानक में आर्थिक समस्या दिखायी देती है। परिवार के प्रमुख राधेलाल का परिवार की तरफ दुर्लक्ष होने से परिवार में आर्थिक समस्या खड़ी हो जाती है। राधेलाल पारिवारिक जिम्मेदारियाँ निभानेवाले आर्थिक दृष्टि से सफल और जिम्मेदार व्यक्ति थे किंतु उनके अंडर ग्राऊंड होने के बाद आर्थिक समस्याएँ 'पाँच आँगनों वाला घर' में घर कर लेती है। जोगेश्वरी के लिए यह बहुत कष्टदायी हो जाता है। वह राधेलाल के देश प्रेम के विरोध में और परिवार के प्रति उनके दायित्व के प्रति सचेत होने की सलाह देती है किंतु बरसों से राधेलाल की मन की इच्छा के आगे वह कुछ नहीं कर पाती है। इसी से परिवार में आर्थिक समस्याएँ आने लगती हैं। राधेलाल का सुराजी होना परिवार में मुश्किलें पैदा करता है। घर के खर्च का बड़ा हिस्सा राधे की कमाई से निकलता था। कमाई वकालत की थी, रोज रोजवाली। राधे नहीं तो कमाई नहीं। कब तक जोगेश्वरी बैंक से खींच-खींचकर खर्चा चलाएँगी। रूपए-पैसे की तंगी का पहला असर पड़ा राधे के परिवार पर। जिस किस्म के उपरी खर्चों के आदि राजन, उसकी माँ और उसके भाई-बहन थें, नमें हाथ-खिंचाई होने लगी। ''घर में इस छोर से उस छोर घूमते हुए जोगेश्वरी जैसे बराबर तौलती रहती - क्या जरूरी है क्या गैरजरूरी, कहाँ कटौती की जा सकती है, कहाँ से कुछ रकम खड़ी हो सकती है? फटकावावाले आँगन में दो-चार इक्के, सिकरम, बग्घी खड़े रहते थें, उसी अनुपात में घोड़े-घोडियाँ थें ... जोगेश्वरी ने सभी को बेच दिया एक-एक करके। घोडे-घोडियाँ जाने से बहुत खर्चा बच गया। उसके बाद जोगेश्वरी ने घर में जहाँ-जहाँ कोई बड़ा फर्निचर देखा तो घनश्याम से कहकर निकलवाया ... फटकवावाले आँगन में जो मेहमानों, गाँव से आए लोगों, रिश्तेदारों के लिए रसोई थी, उसे बन्द कर दिया गया। जो दूर के होंगे वे अपने आप इंतजाम बाहर करेंगे और जो करीबी होंगे वे घर की रसोई में ही खा लेंगे। अलग रसोई न होने से मेहमान कम

रूकेंगे, पहले की तरह नहीं कि चाहे जब चले आए और पड़े हुए हैं। यह सब जोगेश्वरी को पसंद नहीं था, लेकिन मजबूरी थी।''[13]

राधेलाल की कमाई पर ही सारा परिवार खुशहाल जीवन व्यतीत करता था। राधेलाल के बाद परिवार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जो राधेलाल के बाद घर की जिम्मेदारियों को निभा पाये और एकल परिवार की नींव को हिलने न दें। आर्थिक तंगी के कारण भी परिवार में बिखराव आने लगता है। हर कोई अपने-अपने परिवार के बारे में सोचने लगता है। घनश्याम और बाँके की कमाई से इतना बड़ा परिवार चलाना बिल्कुल नामुमकिन था। सन्नी तो घर परिवार के हिस्से में कभी आये ही नहीं। जोगेश्वरी ने पाँच आँगनों वाले घर को बनाए रखने का अपनी तरफ से पूरा प्रयास किया किंतु आर्थिक समस्या के कारण वह अधिक कुछ कर न पायी। इस घर के भविष्य को सोचने के बाद जोगेश्वरी ने आत्मविश्वास से भरे मन को कमजोर पाया। अंदर ही अंदर वह टूटने लगी। इस परिवार की डाग डौर सँभालना अब उसके हद से बाहर हो गया था।

राधेलाल की मृत्यु के पश्चात् कोई भी राधेलाल के परिवार की जिम्मेदारियाँ लेने के लिए तैयार नहीं हुआ। राधेलाल की कमाई पर ऐश करनेवाले राधेलाल के जाते ही मुकर गए। राधेलाल की पत्नी शांति को आर्थिक समस्या से जूझना पड़ा। पति और सास के होते शांति को कोई भी जिम्मेदारी उठानी नहीं पड़ी थी। किंतु उनके जाने के पश्चात् शांति को परिवार की तरफ ध्यान देना पड़ा। यह बहुत दिनों तक निभाने की जिम्मेदारी शांति पर नहीं आयी। जल्द ही उसके बड़े बेटे मोहन ने अफसर की नौकरी हासिल की।

राधेलाल और शांति के बेटे मोहन ने बड़े होने के नाते पारिवारिक जिम्मेदारियों को अंत तक निभाया। अपने भाई-बहन को पढ़ाया-लिखाया, उनके घर बसायें किंतु ऐसा करते हुए उनके अपने स्वयं के परिवार की जरूरतों को वे पूरा नहीं कर पाते हैं। अवकाश प्राप्ति के बाद घर तक वे नहीं बना पाते हैं। मोहन के सामने घर बनाने की बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो जाती है।

मोहन को भी आर्थिक विपन्नता उठानी पड़ती है। पाँच आँगनों वाले घर परिवार के सदस्यों को आर्थिक समस्या से जूझना पड़ता है, इसका वास्तविक चित्रण मिश्र जी ने अत्यंत स्वाभाविकता से किया है।

5.8 मनोवैज्ञानिक समस्या -

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में मनोवैज्ञानिक समस्याएँ दिखायी देती हैं। मनोविज्ञान मन की उन बातों को दोहराता है जिसका संबंध मनुष्य के अंतर्मन से होता है। मन की इच्छा पूरी न होने के कारण मनुष्य शून्य में रहने लगता है। अपने दु:खों के सिवा उसे कोई भी बात नजर नहीं आती। इस उपन्यास के कुछ पात्रों द्वारा मनोवैज्ञानिक समस्याएँ नजर आती हैं।

उपन्यास के शुरू में ही सन्नी का चित्रण मिश्र जी ने किया है। उसे देखकर मनोवैज्ञानिक समस्या नजर आती है। सन्नी का सारंगी में मग्न रहना परिवारवालों को बूरा लगता था। सारंगी को लेकर परिवार के सभी सदस्य उसे सारंगिया कहकर चिढ़ाते हैं। सारंगी कायस्थों में बजाना उनकी शान के खिलाफ है ऐसा परिवार के सभी सदस्यों का मानना था। किंतु सन्नी सारंगी में ही खोए रहते थें। सन्नी का मानना था "सारंगी एक उपेक्षित साज था। जरूरत थी कि उसे संगीत की मुख्य धारा में प्रतिष्ठित किया जाए। कोठे में क्या बजने लगी बेचारी की तवाइफी हो गई। सन्नी की निराशा विषाद का रूप लेने लगी। क्यों नहीं सारंगी को अपने आप में पूर्ण वाद्य मानते लोग? क्यों ऐसा हो रहा था कि सन्नी कलाकार बनने की बजाय सारंगी से कुछ कमानेवाले होते चले जा रहे थे?"[14]

सारंगी के कारण सन्नी का मन मुटाव होने लगा था। सारंगी को छोड उन्होंने किताबों में ध्यान लगा लिया था - "घर में एक किनारे, अपने कमरे में अलग पड़े हुए भी वे तृप्त होते लेकिन देखा कि सब उनके कमरे में बन्द होने को लेकर परेशान हैं, उनके किताबों में डूबे होने को लेकर चिंतित हैं।"[15] इस प्रकार सन्नी के जीवन में अचानक आते रहे बदलाव से सभी परेशान रहते हैं। सन्नी का मन फिर अश्वस्त है। वे जीवन के मर्म तक पहुँच नहीं पाते हैं। मन में प्रश्न ही प्रश्न उठते हैं - गृहस्थों की तंगदिली और छोटे-छोटे स्वार्थ, कलाकारी की दिखावी और हवाई दुनिया, साधुओं का निठल्लापन, ... सबसे विरक्ति होती है सन्नी को। इस प्रकार सन्नी का मन दुनियादारी की बनावट से उब जाता है। सन्नी की विरक्ति मनोवैज्ञानिक समस्या है। डॉ. तिवारी जी ने इसका मूल्यांकन इस प्रकार किया है - "मध्यवर्ग की अतृप्त जीवेष्णा, आरम्भिक जीवन की महत्वाकांक्षाओं और उनसे निर्मित मनोग्रंथियाँ, आनुवांशिक संस्कारों के प्रभावों, आत्मकेंद्रिता के कारण निरंतर बढ़ती संवेदन शून्यता विचारों की टकराहट से उत्पन्न अन्तद्र्वंद्व मूल्यनिष्ठता और

मूल्यहीनता के संघर्ष और अंततः भोगवाद की ओर झुकते जाने और मूल्यों से विरत होते जाने की मध्यवर्गीय प्रभावपूर्ण चित्रण मिश्र जी ने किया है।''[16]

सामान्य तौर पर व्यक्ति जब असाधारण व्यक्तित्व को धारण कर लेता है तो वह मानसिक समस्याओं का शिकार बन जाता है। अस्थिर मन, चंचल स्वभाव, नकारात्मक सोच, मन की इच्छा के लिए अड़े रहने का अट्टाहास और आत्मकेंद्रित बात यह सब मनोविज्ञान में आते हैं। रम्मो का दोहरा व्यक्तित्व भी एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक समस्या है। मिश्र जी ने इस तरह का वर्णन भी बिल्कुल मनोविज्ञान पर आधारित किया हुआ दिखायी देता है। रम्मो अपने माता-पिता की तीसरी सन्तान थी। दो बहनों की शादी के बाद रम्मो पर गृहस्थी सँभालने की जिम्मेदारी आयी किंतु ऐसे में माता-पिता ने उसके भाई की शादी कर दी। भाभी के आने के बाद माता-पिता ने अपनी बहू को मालकिन बना दिया। ''मालकिन होने का सुख भाभी का और गृहस्थी में खटने का दुःख रम्मो का। इसलिए वह बी.ए. फाइनल भी पूरा न कर सकी। रम्मो शिकायत किससे करें - माता-पिता बाहर दोनों ही बाहर रमे हुए। पिता खर्च लायक रूपए-पैसे थमाकर मुक्त हो जाते थे। कभी रम्मो के हाथ में देते भी, तो यह कहते हुए ही कि अपनी भौजाई को दे देना। रम्मो भीतर-भीतर कूढती रहती। अपने हक को इस तरह छूट जाने का दुःख रम्मो को जीवन भर सलता रहा।''[17] राजन से शादी होने के बाद भी उसके अंतर्मन में यही भावना घर कर गयी कि उसका अधिकार कोई उससे छीन न ले। इस प्रकार इस उपन्यास में मनोविज्ञान पर आधारित समस्याएँ दिखायी देती हैं।

राजन के बेटे छोटू की मानसिकता सभी तरह की हदें पार कर जाती हैं। माँ-बाप के लाड़ प्यार का नतीजा उसके विवाह के पश्चात् भी वैसा ही रह जाता है। विवाहिता पत्नी के साथ उसका बर्ताव कई तरह की मानसिक समस्याएँ पैदा कर देता है। ''छोटू आत्मदया में डूब जाता और पीता, खूब पीता। वह यह भी जानता था कि जितनी वह पिएगा उतनी ही बीवी से दूरी बनेगी, क्योंकि उसे पीना पसन्द नहीं, बीवी से दूर होना है ... इसलिए नहीं बर्दाश्त होता तो भी पीता है।''[18] इसी प्रकार 'पाँच आँगनों वाला घर' परिवार का अंतिम पात्र और परिवार का सदस्य अंत में मानसिकता का शिकार बन जाता है।

मिश्र जी ने इस उपन्यास में कुछ मनोवैज्ञानिक समस्याएँ सामने रखी हैं। जिनमें जीवन के प्रति निराशा और कुंठित तथा विषादपूर्ण जीवन की विडंबना दिखायी देती है।

5.9 सामाजिक समस्या -

व्यक्ति से परिवार और परिवार से समाज बनता है। इसीकारण हर व्यक्ति का संबंध समाज से और समाज का संबंध व्यक्ति से होता है। इसी कारण व्यक्ति की समस्या सामाजिक समस्या बन जाती है। सामाजिक समस्या में व्यक्तिगत तौर पर एक ही समस्या अनेक लोगों की समस्या होती है तो वह समस्या सामाजिक समस्या बनती है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में मिश्र जी ने सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया है। जिनमें बूढ़ेपन की समस्या, नारी समस्या, भ्रष्टाचार, जातीयता और यौन समस्या दिखायी देती है।

5.9.1 बूढ़ेपन की समस्या :

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में पारिवारिक विघटन के कारण नई पीढ़ी का पुराने पीढ़ी के साथ मनमुटाव बूढ़ेपन की समस्या को निर्माण करता है। हर नई पीढ़ी नये जमाने के साथ जाने के लिए बेताब होती है और जिस पुरानी पीढ़ी के वे उत्तराधिकारी हैं उस पीढ़ी का महत्त्व उनके लिए कोई मायने नहीं रखता। इसी कारण "मुंशी राधेलाल और माँ जोगेश्वरी द्वारा तिनका-तिनका जोड़कर बनाया गया 'पाँच आँगनों वाला घर' भी विभाजित हो गया। अनेक दीवारें उग आयी।"[19] पारिवारिक बिखराव के कारण माता-पिता के प्रति नई पीढ़ी अपनी जिम्मेदारियों को नजरअंदाज करने लगी। राजन की माँ शांतिदेवी को अपने घर में लाने के लिए राजन तरसता है किंतु उसकी पत्नी रम्मो के कारण अपनी माँ को वह कुछ पलों का सुख भी नहीं दे पाता है। उसके बुढापे में भी यही झमेला खड़ा हो जाता है। उसके दोनों बेटे उसे छोड़कर चले जाते हैं। कहते है कि सन्तान बूढ़ेपन की लाठी होती है किंतु यही लाठी माँ-बाप के हाथों से छूट जाती है तो कई समस्याएँ उनके सामने खड़ी हो जाती हैं। बूढ़ेपन की समस्याओं को मिश्र जी ने चित्रित किया है।

5.9.2 नारी समस्या :

किसी भी व्यक्ति की समस्या चाहे स्त्री हो अथवा पुरूष उसकी समस्या सामाजिक समस्या बन जाती है। जोगेश्वरी को अपने पति से कई तरह के जुल्म सहने पड़ते हैं। किंतु सुसंस्कृत जोगेश्वरी उसके सारे जुल्म सह लेती है और अपने परिवार के लिए अंत तक उस परिवार की एक कुशल गृहिणी बनकर सँभालती है।

इस उपन्यास के पात्र छोटू शादी के तीसरे दिन से ही अपनी पत्नी पर जुल्म ढालता है। उसके खानदानी स्वभाव का अर्थ अपने तरीके से लगाता है। शादी ब्याह जैसे समाज से बने हुए नियमों को ठुकराकर अपनी पत्नी से अलग होने के लिए पिता राजन के नाक में दम कर लेता है। पिता की लाख कोशिशों के बावजूद वह अपनी मनमानी करता है और नई नवेली दुल्हन को छोड़कर चला जाता है। भारतीय समाज में एक बार ब्याही गयी लड़की को पति के छोड़ने के बाद उसकी कोई इज्जत नहीं रहती है, यह एक बहुत बड़ी समस्या है जिसका चित्रण मिश्र जी ने किया है।

नारी समस्या समाज के बने नियमों के कारण भी खड़ी हो जाती है। जैसे इस उपन्यास में 1940 से लेकर 1975 तक जो दौर है उसमें भारतीय सामाजिक परंपरा से आए नियमों का पालन हर नारी अपने आपे में रहकर करती थी। सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाना वह अपना कर्तव्य ही नहीं दायित्व समझती थी। जैसे कि जोगेश्वरी, शांति, नइकी, ओमी तक सभी नारियाँ अपने कर्तव्य को भली-भाँति समझ पायी थी।

पाँच आँगनों वाले घर परिवार के सदस्यों से रिश्ता रखनेवाली तवायफ कमलाबाई के लिए विवाह करना एक सामाजिक समस्या का कारण बनता है। मन की इच्छा होते हुए भी उसका विवाह न हो पाना यह एक घोर सामाजिक समस्या ही है।

मिश्र जी ने 1990 तक के भारतीय समाज को चित्रित किया है। जीवन की सच्चाई को उन्होंने उपन्यास में भर दिया है। उपन्यास प्रासंगिक तो है ही साथ ही में नारी समस्याओं का चित्रण उसमें हुआ है किंतु नारी समस्या का अधिक्य 1990 के दौरान और उसके बाद और आज भी दिखायी देता है। भारतीय समस्याएँ प्राचीन काल से लेकर आज तक विविध रूपों में चली आयी हैं। इसका चित्रण मिश्र जी ने जितनी सहजता से किया है वह उल्लेखनीय है।

5.9.3 भ्रष्टाचार :

भ्रष्टाचार यह एक बहुत बड़ी सामाजिक समस्या है। भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ही लोगों के मन में देश के लिए अपनापन था किंतु स्वतंत्रता को उन्होंने व्यक्तिगत जीवन को उजागर करने का जरिया मान लिया। सत्ता और भोगविलास ने नीतिमत्ता को पैरों तले दबोच लिया। सुख-सुविधा और पदलोलुपता ने स्वार्थ को अपना लिया और भ्रष्ट समाज का निर्माण हुआ। भ्रष्ट राजनीति और भ्रष्ट समाज ने भ्रष्टाचार के राक्षस को जन्म दिया है, जो आज तक कैन्सर की बीमारी की तरह फैलता आया है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में मिश्र जी ने भ्रष्टाचार के नीति को चित्रित किया है। राजन के घर में ढेर सारी सुख-सुविधाएँ रिश्वत लेकर ही आयी हुअी है ऐसा ओमी और मोहन का मानना था। जब ओमी राजन की इस हरकत को छेड़ती है तो राजन स्वयं जैसे इस बात को गुस्से से ही सही किंतु मान लेना है - "हाँ, मैं बेइमान हूँ, घूसखोर हूँ, नीच हूँ, सब अवगुण हैं मुझमें ..."[20] उपन्यास के इस संवाद से भ्रष्टाचार की समस्या को चित्रित किया है।

5.9.4 जातीयता :

मिश्र जी ने सन्नी के विचारों द्वारा सामाजिक व्यवस्था के साथ-साथ भ्रष्ट राजनीति को बताया है और सन्नी के द्वारा ही जाती संबंधी भावना को चित्रित किया है। वे पिछड़ी जाती और हरिजनों को आरक्षण देने के विरोध में अपने विचार व्यक्त करते हुअे दिखायी देते हैं - पिछड़ी जाति तथा हरिजनों का विकास करने हेतु तथा परंपरा से आयी हुअी इस कुरितियों को खत्म करने के उद्देश्य से पीछड़ी जातियों को आरक्षण रखा जाता है। इस देश पर हरिजनों का उतना ही हक है जितना की उच्च जातियों का। फिर समाज ने वर्णव्यवस्था का निर्माण करके और नीचे दर्जे के काम देकर जन्म से ही जाती का कलंक उनके माथे पर क्यों मार दिया है? यह बहुत बड़ी सामाजिक समस्या है। मनुष्य का जन्म लेकर भी पशुओं की तरह अपना जीवन व्यतीत करना यह कहाँ का न्याय है? भारतीय समाज के श्रेष्ठ समाजकर्ता डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने मानवता की पहचान करा दी। कर्म के अनुसार जातियाँ निर्माण करने के कारण कैसे हरिजनों पर, पीछड़ी जातियों पर अन्याय हुआ है इसका गहनता से अध्ययन कर समाज को जागृत करने का प्रयास किया है। मानवतावाद के साथ देश के विकास की जिम्मेदारियों का अधिकार पीछड़े समाज का

उतना ही है जितना की उच्चवर्णियों का। लोकतंत्र को सही प्रविधि में लाना है, पारंपरिक विवाद को छोड़कर देश का विकास करना है, तो शिक्षा का माध्यम सर्वश्रेष्ठ है और जो वंचित है, दुर्लक्षित हैं उन्हें प्रमुख धारा में लाने के लिए आरक्षण की आवश्यकता है। स्वतंत्रता के बाद यह सामाजिक जिम्मेदारी होने के बावजूद भी सन्नी इस आरक्षण के विरोधी दिखायी देते हैं या फिर सामाजिक दृष्टि से वे इसकी ओर देखते नहीं हैं। ''पूरे समाज में मूल्यों की पुनर्स्थापना ज्यादा जरूरी है या कुछ खास जातियों का उत्थान ... सन्नी बौखला उठते हैं।''[21]

मिश्र जी ने भारतीय समाज की वास्तविकता का चित्रण किया है जो एक बहुत बड़ी समस्या का कारण बना है। इसका वर्णन मिश्र जी इस प्रकार करते हैं - ''पदों पर पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण और बढ़ाया जाएगा। प्रतिक्रिया में दिल्ली के छात्र कॉलेज और युनिवर्सिटी छोड़कर सड़कों पर उतर आए। जनजीवन ठप्प करना, तोड़फोड़ करना, ये शुरू हो गए। मामला सामान्य विद्रोह प्रदर्शन तक ही सीमित नहीं रहा, बड़ी जल्दी वह आत्मदाह, सड़कों पर आत्मदाह, सामूहीक आत्मदाह में बदल गया। यह साधारण-सी बात हो गई थी फलों जगह एक छात्र ने किरोसिन छिड़ककर आत्मदाह कर लिया। राजधानी में मृत्यु का आतंक छा गया था।''[22]

इस प्रकार के वर्णन से वास्तविकता तो नजर आती है। राजनीति में सत्ता को पाने की लालसा में आरक्षण लागू कर देना और इसके विरोध में जनता का प्रक्षोभ यह बात सामाजिक समस्या को तीव्रता से बढ़ाती है। क्योंकि राजकर्ताओं ने चाहे जिस भावना से हो आरक्षण देने का मूल भाव वह यही है कि हजारों वर्षों से जो मुख्य धारा में समाविष्ट नहीं हुए हैं उनके लिए कुछ करना यह एक सामाजिक जिम्मेदारी थी किंतु सन्नी हो या चाहे देश की जनता हो, जो इस तरह की संकुचित विचारों का शिकार है या कुरीतियों और जातिव्यवस्था को माननेवाली है वह इसी तरह का आंदोलन करेगी। प्रकृति सभी जीव जंतुओं, मनुष्यों और प्राणियों को एक ही पल सब कुछ देती है। सूरज का प्रकाश हो, चाहे बादलों की बरसात, या फिर हवा का बहाव भी सभी को एक साथ मिलता है किंतु इस देश में पीछड़े समझते लोगों को कुछ नहीं मिलता जब मनुष्य को मनुष्य बनकर रहना नसीब नहीं होता, तो कई समस्याओं का निर्माण हो जाता है।

5.9.5 व्यसनाधीनता :

मिश्र जी ने उपन्यास में सभी तरह की सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया है। युवा वर्ग में व्यसनाधीनता आज बड़े पैमाने में दिखायी देती है। स्मोकिंग करना, शराब में धुत् होना यह उन्हें प्रतिष्ठित होने का प्रमाण लगने लगा है। फिल्मी स्टाईल से जीवन बिताना यह युवा वर्ग की शान बन गयी है। उपन्यास का पात्र छोटू की शराब की आदत उसकी जिंदगी को तबाह कर डालती है। शराब की आदत से मजबूर इन्सान कभी भी अपने पर नियंत्रण नहीं रख सकता है। छोटू भी शराब की आदत के कारण 'कन्फ्यूज्ड' जीवन बीताता है। कोई भी निर्णय लेते समय वह कमजोर पड़ जाता है। माता-पिता के लाख समझाने के बावजूद वह अपनी हरकतों से बाज नहीं आता है। व्यसनाधीनता के कारण ही वह माँ-बाप का अनादर करता है और उनकी सही समझ भी उसे कोंसनेवाली लगती है और वह और भी अधिक अपने आप को शराब में डूबो देता है। व्यसनाधीनता के कारण ही वह अपनी ब्याहता पत्नी को छोड़ने के लिए अड़े रहता है।

छोटू की तरह ही 'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास का और एक पात्र घनश्याम भंग पीकर घर में पड़ा रहता है। आदमी जब भी अपनी आदत का गुलाम बन जाता है तो व्यसनाधीनता जोर पकड़ लेती है। छोटू के बारे में भी यही होता है। वह अपने पिता का आदर करना तो दूर लेकिन शराब पीकर उल्टी-सीधी बातें करने लगता है। बेहद पैनी, साफ और बारिश में पत्ती की तरह शराब से थरथर करती आवाज, ''मिस्टर राजन ... मुझे अपने आपको आपका बेटा कहते हुए शर्म आती है। आप मेरी नजरों से गिर गए मिस्टर राजन!''[23] राजन कुछ कह नहीं पा रहा था क्योंकि उधर से पैनी आवाज में एकालाप लगातार जारी था। पीछे-पीछे आई राजन के लिए गालियाँ। इस प्रकार छोटू को शराब ने पूरी तरह से बर्बाद किया था। वह अपने पिता तक को मानने के लिए तैयार नहीं था। जन्मदाता का घोर अपमान करने का साहस शराब के कारण ही हो जाता है।

मिश्र जी ने छोटू के माध्यम से आज के युवा वर्ग को प्रतिनिधित्व कर व्यसनाधीनता जैसी गंभीर समस्या पर प्रकाश डाला है।

5.9.6 यौन समस्या :

आधुनिक समाज में यौन समस्या यह एक बहुत बड़ी सामाजिक समस्या बन गई है। पुराने जमाने में भारतीय समाज में प्राचीन सभ्यता और संस्कारों के कारण

माँ-बाप का कहना माना जाता था। समाज से बनाए गए संस्कारों की जिम्मेदारी लेना अपना दायित्व है ऐसा माननेवाला एक वर्ग था। माता-पिता को ईश्वर की तरह मानने के संस्कारों के कारण जीवन के सभी एहम निर्णय व्यक्ति माता-पिता पर ही छोड़ देते थें उनका सम्मान करते थे। माता-पिता की इच्छानुसार विवाह करने पर भी उनका वैवाहिक जीवन सुख से बीतता था। व्यक्ति जब समाज ने बनाए हुए नियमों का पालन करता है तो किसी तरह की समस्याएँ पैदा ही नहीं होती हैं। किंतु आज कल की पीढ़ी को न समाज का डर है, न ईश्वर का और न ही माता-पिता का। इसी कारण कई समस्याओं का निर्माण होता है। यौन समस्या ने आज-कल गंभीर रूप धारण कर लिया है। पहले स्त्रियों का सम्मान किया जाता था किंतु आधुनिक समाज में बलात्कार का प्रमाण बढ़ गया है। रिश्ते-नातों की पहचान तक भूल रहे हैं आज के समाज में रहनेवाले लोग!!

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में छोटू के माध्यम से मिश्र जी ने यौन समस्या को चित्रित किया है। छोटू शादी के पहले ही एक साल तक अपनी होनेवाली पत्नी के साथ रहने की माँग करता है। उसकी इस माँग को पूरा नहीं किया जाता है। शादी के बाद वह अपनी इच्छा के अनुसार पत्नी का व्यवहार होना चाहिए ऐसी कामना करता है किंतु जब उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हो पाती है तो वह उसे छोड़ देने की बात करता है। राजन उसे समझाता है तो वह कहता है - "वह आपकी पीढ़ी थी कि जवानी घुट-घुटकर काटो ताकि बुढापे में एक-दूसरे का सहारा बन सको। हमें शुरूआत वहाँ से चाहिए जहाँ आप लोग एंड करते थे ... क्या फायदा अगर जिन्दगी के अच्छे दिन एडजेस्टमेंट करते-करते ही निकाल दिए।"[24]

मिश्र जी ने आधुनिक पीढ़ी के यौन संबंधों के प्रति जो विचार है, उनको चित्रित किया है। ॲडजस्टमेंट करने की आवश्यकता आज-कल भी नही लगती है। इसी कारण विवाह विच्छेद होते हैं, जिसका प्रमुख कारण होता है यौन-संबंध।

5.10 धार्मिक समस्या -

धर्म मनुष्य निर्मित एक ऐसी बात है कि जिसके कारण जीवन जीते समय मनुष्य को सही दिशा मिलती है। धर्म मनुष्य को सुसंस्कृत बना देता है किंतु धर्म की सही परिभाषा न समझनेवाला मनुष्य धर्म का आधार लेकर कई सामाजिक समस्याएँ खड़ा कर

देता है। मनुष्य ने धर्म को बनाया है ताकि वह जीवन में सही मार्ग अपनाए किंतु धर्म ने जैसे मनुष्य का निर्माण किया हुआ हो उसी तरह आज के लोग आचरण करते हुअे दिखाई देते हैं। भारतीय एकात्मता को बनाए रखने के लिए सर्वधर्म समभाव रखना चाहिए किंतु हर कोई अपने ही धर्म को श्रेष्ठ मानता है तथा दूसरे धर्म की आलोचना करता रहता है और स्वयं के धर्म को और अधिक महत्त्व देते हुए दूसरे धर्म को कोसना यह आपस में तकरार निर्माण कराता है और यही से हिंसा की शुरूआत होने लगती जो समाज के लिए विघातक बात बन जाती है। सभी धर्मों में किसी न किसी प्रकार का आडंबर दिखायी देता है। इसका चित्रण मिश्र जी ने इस उपन्यास में किया हुआ दिखायी देता है। सन्नी की साधुओं के प्रति जो आदर भावना होती है वह साधुओं की सत्य स्थिति को देखने के बाद बदल जाती है।

सन्नी साधुओं के साथ इलाहाबाद के एक टोली में शामिल हो जाते हैं और देखते हैं - ''क्या था जो लोगों को यहाँ लाया? वही संसार छोड़ देनेवाले इन साधु-महात्माओं में भी घोर सांसारिकता, टुच्चापन, अभिमान। जिसे देखा गांजा चढ़ाकर खों-खों कर रहा है। जो पीठासीन है ... महन्त ... उनमें से कुछ शारीरिक रूप में खासे गन्दे थे, क्या वे मन से साफ हो सकते हैं? एक मठाधीश दूसरे के लिए ईर्ष्या-द्वेष में सुलगता रहता है, उस महन्त के आखाड़े के लिए अच्छी जमीन दे दी गई और उन्हें यह मिली। उसकी गद्दी में क्या-क्या है अपनी गद्दी की दौलत की तुलना में। स्नान के लिए जुलूस निकला और किसी मठाधीश को कम में थोड़ा पीछे रख दिया तो मारे गुस्से के रास्ता बदल देंगे। भले ही फिर कितने श्रद्धालुओं, यात्रियों को परेशानी हो जाए। मुहुर्त पर पहले उनका स्नान होता, फिर वे अपने शिष्यों से घाट धुलवाएँगे ताकि उनके शरीर से लगकर गिरा पानी घाटों पर साधारण आदमियों के पैरों से कुचला न जाए। महन्त लोग प्रवचन आदि में भी बोलते हैं, वह जैसे रटा-रटाया ... जैसे गले से निकलकर मुँह में आता जा रहा है, भीतर से उनकी निष्ठा से निकलता नहीं दिखता। बहुत कम हैं जो पढ़े-लिखे होने का आभास देते हैं, विद्वान तो मुश्किल से एक मिलेगा। यह सब देख-देख सन्नी को घोर वितृष्णा होती।''[25]

इस प्रकार की धार्मिक विड़ंबनाओं को मिश्र जी चित्रित करते हैं जो धर्माभिमान के साथ-साथ धार्मिक समस्या की यथार्थ स्थिति की प्रचिती मिलती है।

धार्मिक बने रहने की बनावट स्थिति को मिश्र जी ने सन्नी के मन के विचारों द्वारा प्रस्तुत किया है। सन्नी साधुओं की सच्चाई को देखते हैं तो धर्म के बारे में यह कहने लगते हैं - "यह तो धर्म नहीं, धन्धा है ... धर्म का धन्धा। धन्धेबाजी संगीत की दुनिया में भी थी, लेकिन वहाँ इतना घिनौना रूप नहीं था, क्योंकि ज्यादा से ज्यादा बात कला से गिरने की होती, कला को बेचने को होती ... पर श्रम की कमाई तो वह हर हाल में थी। यहाँ बातें मन, आत्मा, अध्यात्म की होती हैं लेकिन अपने शरीर तक को स्वच्छ नहीं रहते ये लोग।"[26] इस प्रकार साधुओं के मेले में रहने के बाद सन्नी का मन उब जाता है और धर्म की यह विपरीत स्थिति को देखकर साधुओं में पनपनेवाली बनावट धार्मिकता के प्रति उसे संदेह होने लगता है।

मिश्र जी ने साधुसंतों के आडंबर को पर्दाफाश किया है। इस प्रकार के सजीव चित्रण मिश्र जी के लेखन में बिना पक्षपात से हुआ है। मिश्र जी ने इस तरह की धार्मिक विडंबना को बताकर धार्मिक समस्या को चित्रित किया है। साथ ही सन्नी द्वारा वे अपने शुद्ध और सात्विक विचारों को चित्रित करते हुए यह भी कहना चाहते हैं कि धार्मिक समस्या का कारण क्या है। "रामायण की बातों, आदर्श की बातों की जगह, आज के समय को सही दिशा में लाने की ठोस-ठोस बातें हो। भक्ति और धर्म में बहुत हुआ तो आप अकेले की मुक्ति हुई, बात तो तब है जब दूसरों का भी कुछ हो। बाहर से जुड़ने की कोशिश गहरा गई है जब से राजनेताओं का असली रूप उजागर होने लगा है।"[27]

राजनीति में धर्म का उपयोग धार्मिक समस्याओं को निर्माण करता है। धर्म उपयोग आज-कल सिर्फ सत्ता प्राप्त करने हेतु किया जाता है जिसके कारण हिंसा को बढ़ावा मिलता है।

निष्कर्ष :

गोविन्द मिश्र जी लिखित 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास की समस्याएँ भारतीय समाज में रहनेवाले साधारण मनुष्य की समस्याओं की तरह दिखायी देती हैं। समस्याओं का जन्म तब होता है जब मनुष्य अपनी स्वार्थी भावना और संकुचित विचारों के कारण मानवता को भूलता है। अपनी जिम्मेदारियों से मुँह फेर लेता है और

अपने परिवार का उत्तरदायित्व लेना नहीं चाहता है। मानवता चाहे समाज में हो या परिवार में, मानवता से एक दूसरे के प्रति जो भाव होते हैं उसमें ढेर सारी आत्मीयता और दूसरों के बारे में सोचने की एक चाहत होती है। इससे मनुष्य दूसरों को सुख देकर स्वयं को सुखी बना देता है। भारतीय समाज में और इस उपन्यास में इस तरह का वातावरण सन् 1975 तक ही रहा है। मानवता ने स्वार्थ को अपना लिया और समस्याओं का जैसे दौर ही शुरू हुआ। मनुष्य की संकुचित भावना से सिकुड़ता गया सिमटता गया। मनुष्य का मनुष्य पर से विश्वास उड़ने लगा। रिश्ते-नातों में भी एक दरार सी आ गयी और समस्याओं का निर्माण होने लगा। भौतिक सुख-सुविधाओं के पीछे दौड़नेवाले मनुष्य पैसे के पीछे भागने वाले इन्सान ने नैतिकता और सामाजिक बंधनों की आवश्यकता को नजर अंदाज कर दिया। इस तरह से एक परिवार से लेकर पूरे समाज पर इसका असर होने लगा और मानवता सदा के लिए लुप्त हो गयी। व्यक्ति आत्मकेंद्रित बनने लगा। अपने बारे में ही सोचना, जैसे उसकी स्वतंत्रता और हक बन गया। इसी हक के लिए लड़ना यही उसका कर्तव्य है ऐसी उसकी धारणा हो गयी। एकल परिवार से वह अपना परिवार बनाने लगा किंतु अपने परिवार के लोग जब अपना-अपना सोचने लगें तो हर व्यक्ति का एक अलग परिवार बन गया और ऐसा परिवार जो अपने जन्मदाताओं की मृत्यु पर आना भी गँवारा नहीं समझता। भारतीय परिवार की त्रासदी का अत्यंत प्रामाणिक चित्रण मिश्र जी ने किया है।

गोविन्द मिश्र के उपन्यास 'पाँच आँगनों वाला घर' का अनुशीलन करने के लिए इस उपन्यास में चित्रित समस्याओं की ओर देखना जरूरी था। उपन्यास के शुरू के दौर में मिश्र जी ने पाँच आँगनों वाले घर में रहनेवाले लोगों के खुशहाल जीवन को बताया है। पाँच आँगनों वाले घर का बडप्पन, उस घर की संस्कृति, उससे जुड़े हुअे लोग और लोगों का आपस में प्रेम, लगाव आदि का सुंदर वर्णन मिश्र जी ने किया है। भारतीय समाज के साथ-साथ यह परिवार बदलता हुआ दिखायी देता है। समय के अनुसार इस पाँच आँगनों वाले घर में भी परिवर्तन आता नजर आता है।

पंचम अध्याय में 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास में चित्रित समस्याओं का अंकन कर दिया है। 'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास की सभी तरह की समस्याओं पर प्रकाश डाला है जिसमें प्रमुख हैं - पारिवारिक समस्या, पारिवारिक

समस्याओं के कारण, राजनीतिक समस्या, आर्थिक समस्या, मनोवैज्ञानिक समस्या, सामाजिक समस्या, धार्मिक समस्या आदि समस्याओं को चित्रित किया है।

'पाँच आँगनों वाला घर' इस उपन्यास से भारतीय समाज में स्थित एक परिवार की त्रासदी के माध्यम से सन् 1940 से लेकर 1990 तक के भारतीय समाज का वास्तविक दर्शन हुआ है। सन् 1990 तक से आज की स्थिति का भारतीय समाज पाश्चात्यों के अंधानुकरण से भारतीय संस्कृति और सभ्यता को आज भी मिटा रहा है। पारिवारिक जिम्मेदारियों से हर व्यक्ति मुकरने लगा है। एक परिवार से एक व्यक्ति तक ही परिवार सिमटने लगा है और आज वर्तमान में भी भारतीय परिवार की दारूण स्थिति नजर आती है। कई परिवार ऐसे हैं जो अपने माता-पिता से अलग, अपने गाँव से अलग इतना ही नहीं बल्कि अपने देश से भी अलग रह रहे हैं। भारतीय समाज की यह पारिवारिक दुरावस्था को मिश्र जी ने अपने इस उपन्यास के माध्यम प्रकट करना चाहा है। वर्तमान स्थिति में कई तरह की समस्याओं का सामना मनुष्य को करना पड़ता है।

* * * *

संदर्भ

क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	पृष्ठ सं.
1		नालन्दा विशाल शब्द सागर	1407
2	मानक हिंदी शब्द कोश	मानक हिंदी शब्द कोश	283
3	अग्रवाल विजयकुमार	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में सामन्ती जीवन	188
4	उर्मिला शिरीष	सृजन यात्रा : गोविन्द मिश्र	8
5	- वही -	- वही -	77
6	उर्मिला शिरीष डॉ.रामजी तिवारी		70
7	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	48
8	- वही -	- वही -	69
9	- वही -	- वही -	53
10	- वही -	- वही -	130
11	- वही -	- वही -	74
12	- वही -	- वही -	103
13	- वही -	- वही -	33
14	- वही -	- वही -	15
15	- वही -	- वही -	42
16	डॉ.रामजी तिवारी	सृजन यात्रा : गोविन्द मिश्र	68
17	गोविन्द मिश्र	पाँच आँगनों वाला घर	65

क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	पृष्ठ सं.
18	- वही -	- वही -	151
19	- वही -	- वही -	98
20	- वही -	- वही -	98
21	- वही -	- वही -	157
22	- वही -	- वही -	157
23	- वही -	- वही -	152,153
24	- वही -	- वही -	149
25	- वही -	- वही -	42
26	- वही -	- वही -	42
27	- वही -	- वही -	74